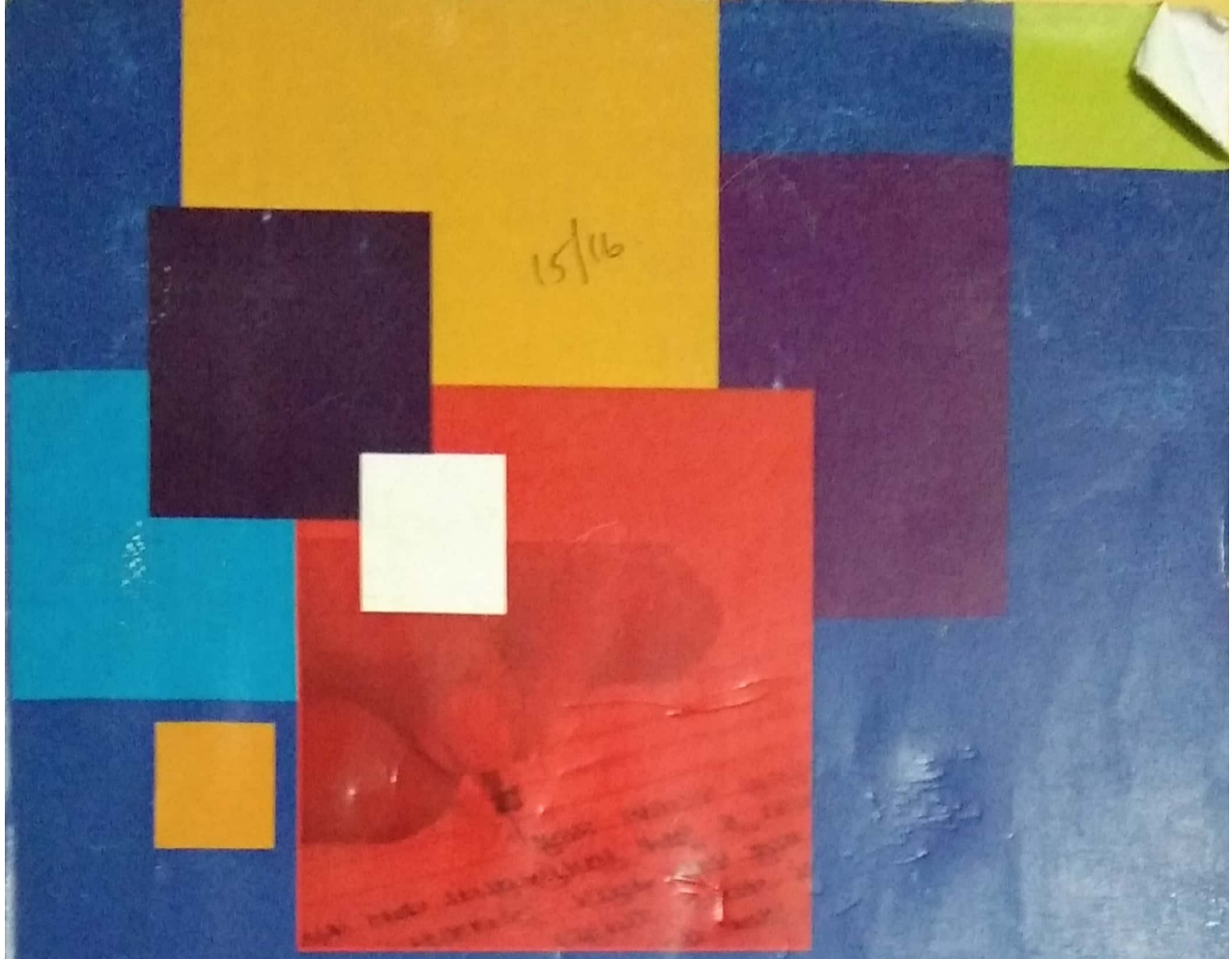

15/16

भारतीय साहित्य : अद्यतन प्रवृत्तियाँ

सं. डॉ. आर. सेतुनाथ

Scanned with CamScanner

सं. डॉ. आर. सेतुनाथ

जन्म : 1964, परवूर, जिला कोल्लम, केरल
पिता-स्वर्गीय वी.के. राघवन आचारी
माता-श्रीमती पी. रुक्मम्मा
पत्नी-डॉ. उषा. एम.
बेटी-हरिप्रिया

शिक्षा : बी.एस.सी. (भौतिकी), एम.ए. (हिन्दी)
पी-एच.डी. (केरल विश्वविद्यालय)
पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन

अध्यापन : सरकारी कॉलेज, एलेप्पि़, सरकारी कॉलेज,
मंजेश्वर (केरल), सरकारी कॉलेज, माहि (पोंडिच्चेरी यू.टी.)
यू.जी.सी. विजिटिंग असोसिएट, केरल विश्वविद्यालय (2001-2003)

सम्प्रति : असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय

प्रकाशन : 1. उपन्यासकार अज्ञेय के पात्र : मनोवैज्ञानिक अध्ययन
2. दक्षिण में हिन्दी भाषा और साहित्य : दशा और दिशा (सह सम्पादक)
पत्र-पत्रिकाओं में शोध आलेख एवं मौलिक कविताओं का प्रकाशन

सम्पर्क : 09447006200

Scanned with CamScanner

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुदान प्राप्त

ISBN : 978-81-8111-363-4

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : गोविन्द पचौरी

जवाहर पुस्तकालय

हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक,

सदर बाजार, मथुरा-281001 (उ. प्र.)

दूरभाष : 09897000951

ई-मेल: jawahar.pustakalaya@gmail.com

मूल्य : ₹ 300.00

प्रथम संस्करण : 2016

आवरण : गोविन्द पचौरी

शब्द-संयोजन : शालू कम्प्यूटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

फोन नं. 09313588569

मुद्रक : जय भारत प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

पुरोवाक्	प्रो. (डॉ.) एन. रवीन्द्रनाथ	7
भूमिका	डॉ. आर. सेतुनाथ	9
भारतीय साहित्य	प्रो. (डॉ.) ए. अरविन्दाक्षन	13
मलयालम साहित्य में महिला लेखन	प्रो. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा	20
डॉ. सुशीला टाकभौरे के काव्य में लोकपक्ष	प्रो. (डॉ.) आर. शशिधरन	33
सशक्त मलयालम लेखिका कमला सुरैया की कहानियों में मातृत्व की भावना	प्रो. सुधा बालकृष्णन	43
समकालीन मलयालम कविता	प्रो. (डॉ.) पी. रवि	60
तेलगु दलित साहित्य-विमर्श	प्रो. (डॉ.) रामप्रकाश टिकेकर	76
बड़ी चिंताओं से ओत-प्रोत आज की कहानियाँ	डॉ. आर जयचन्द्रन	92
राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती और राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त	डॉ. प्रमोद कोवप्रत	105
1128 में क्राइम 27—एक अध्ययन	डॉ. मारग्रेट वी.जी	119
जयशंकर प्रसाद और तमिल गद्यकार जयकांतन—नारी और प्रेम के चित्रण के संदर्भ में	प्रो. एल ज्ञानम	123
मराठी दलित कवयित्रियों की वेदना एवं विद्रोह	डॉ. अशोक बाचुलकर	127
'छप्पर' उपन्यास में प्रतिरोध स्वर	डॉ. पी.के. अजित कुमार	134
समकालीन कहानी में बाजारवाद एवं नारी विमर्श	डॉ. मूसा एम.	140
अनाज पकने का समय : प्रकृति		

Scanned with CamScanner

समकालीन कहानी में बाजारवाद एवं नारी विमर्श

—डॉ. मूसा एम.

बाजारवाद एवं नारी विमर्श पर लिखी गई समकालीन कहानियों पर विचार करने के पहले समकालीन समय एवं परिवेश का अवलोकल करना आवश्यक है। सन् 1990 के बाद का समय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिवेश में बुनियादी फेरबदल का समय रहा है। सोवियत संघ के विघटन और पूर्वी यूरोपीय देशों में समाजवादी व्यवस्था की परिसमाप्ति के साथ एक ध्रुवीय विश्व का उदय, उपनिवेशवादी और विश्व पूँजीवाद के दबाव के चलते आर्थिक उदारीकरण, मुक्त व्यापार तथा विनिवेश की नई नीतियाँ सामने आईं।

भूमंडलीकरण, विश्वग्राम, विकास आदि लुभावने आर्थिक तंत्रों के जाल में राष्ट्र एकदम फँस गया था। विश्व पूँजीवाद के अनियंत्रित शोषण, बाजार और बाजार-तंत्र की अपसंस्कृति के कारण बनी विषम परिस्थिति से मुक्ति राष्ट्र के लिए असंभव बन गया था। समकालीन कहानियाँ इस समय और समाज से मुखातिब करने वाली और समय के तनाव और चुनौतियों को व्यक्त करने वाली हैं। उदारीकरण तथा निजीकरण के फलस्वरूप पैदा हुए बाजारवाद ने पूरी दुनिया में अनेक नये परिवर्तनों को जन्म दिया है। विश्व की अर्थ-व्यवस्था के परस्पर बनते संबंधों ने बाजारवाद की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है। बाजारवाद के कारण सिर्फ आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी अनेक प्रकार के परिवर्तन आए हैं। अब व्यक्ति, परिवार आदि समाज के विभिनन अंगों को नये रूप में परिभाषित करने की आवश्यकता आ गई है।वैश्वीकरण के बाजार ने सभ्यता, संस्कृति और साहित्य को गहरे में प्रभावित किया है।

Scanned with CamScanner

१

समकालीन मलयालम कविता

—पी. रवि

समकालीन कविता के बारे में कहाँ से शुरू करूँ, यह दिक्कत की बात है। तथाकथित आधुनिकतावादी कविता के बाद की कविता को हम अक्सर समकालीन कविता की संज्ञा देते आ रहे हैं। लेकिन गत तीस-पैंतीस साल की कविता की प्रवृत्ति एवं उसकी वैचारिक ऊर्जा दोनों एक जैसी नहीं हैं। आठवें दशक के केरलीय राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अंतरिक्ष में मार्क्स और माओ मुखरित रहे और कविता भी इसका हिस्सा हो गई। यह तत्कालीन मुख्य धारा मलयालम कविता की बात है। इस समय पूर्ववर्ती कुछ कवि मौन हो गए और कुछ समय के अनुसार अपने को बदलने को मजबूर हुए। नवाँ दशक विश्व स्तर पर ही संक्रमण का समय रहा। एक ओर विश्व स्तर पर नव उपनिवेशवाद एवं नई आर्थिक नीति का आरंभ हुआ तो दूसरी ओर रूस और अन्य पूर्वी यूरोपीय देशों में समाजवादी शासन का अन्त हुआ। इससे सशस्त्र क्रांति और सर्वहारा की मुक्ति दूर का स्वप्न लगने लगे। इस अंतराल में बहुराष्ट्रीय पूँजी द्वारा प्रायोजित आर्थिक उदारीकरण एवं विश्व बाजार साकार होने लगे। इसी समय स्त्रीवाद, दलित चेतना, पारिस्थितिक आदि साहित्यिक-सांस्कृतिक एवं सामाजिक दरवाजों पर दस्तक दे रहे थे। इसके साथ सन् 1985 के बाद की कविता की प्रकृति में साफ अंतर दिखाई देने लगा। स्त्री, दलित एवं पारिस्थितिकी के साथ इस समय गांधी और मार्क्स को एक साथ रखकर पढ़ने का प्रयास भी शुरू हुआ, जिसका प्रभाव आज की कविता के वैचारिक पक्ष को मजबूत कर भी रहा है। कहने का मतलब यह है कि यहाँ समकालीन कविता पर विचार दो चरणों में करने का प्रयास करना चाहता हूँ।

आठवें दशक की कविता विचारधारा की कविता है जिसके आगे स्वस्थ एवं

Scanned with CamScanner